प्रवेश 1

जैन पाठशाला हेतु पाठ्यक्रम

प्रस्तुति

डॉ. मनीषा दिलीप जैन

छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

प्रवेश - 1

जैन पाठशाला हेतु पाठ्यक्रम

प्रस्तुती

डॉ. मनीषा दिलीप जैन

त्रिलोकी नगर, छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

प्रथम संस्करण : 2019

मुद्रक : प्रकृति प्रिंटर्स

छिन्दवाड़ा (म.प्र.) मो. 8319637899

प्राप्ति स्थान :

(1) सिंघई शॉ मिल, छोटा तालाब, छिन्दवाड़ा

मो. 9826449970, 9827249825

9399938202

(2) 63 एंथम, गुडलापोचमपल्ली

जिला आरआर हैदराबाद (तेलगांना)

मो. 8629402371, 9866228611

(3) डी. 46, मिनाल रेसीडेंसी, जेके रोड भोपाल

मो. 9993693558,

(4) डी.1767, सुदामा नगर, राममंदिर के पास

इंदौर मो. 9575599994, 6265534354

विषय-सूची

विषय		पृष्ठ क्र.
	विषय सूची	1
	प्रस्तावना	2
पाठ 1	णमोकार मंत्र	3
पाठ 2	वर्णमाला	4
पाठ 3	गणना	20
पाठ 4	वस्तु परिचय	25
पाठ 5	चौबीस तीर्थंकर नाम व चिह्न	30
पाठ 6	आओ गीत गाएं	32

प्रस्तावना

ज्ञान समान न आन जगत में सुख कौ कारण ।
इहि परमामृत जन्म जरा मृत्यु रोग निवारन ।।

छहढाला में पंडित दौलतराम जी ने ज्ञान को सुख का कारण बताया है ।

न्यानं तिलोय सारं, न्यानं दंसेइ दंसनं मग्गं ।
जानदि लोय पमानं, न्यान सहावेन सुधमपानं।।258।।

ज्ञान समुच्चय सारजी ग्रंथ में आचार्य प्रवर श्रीमद जिन तारण तरण ने भी ज्ञान को स्वपर प्रकाशक बताया है। ज्ञान की महिमा तो यही है कि उपाध्याय परमेष्ठी को शिक्षक की संज्ञा दी है। सहस्त्र वर्षों से पाठ पढ़ाने की यह परंपरा जैन धर्म में विद्यमान है । आज जब ज्ञान का क्षयोपशम कम होता जा रहा है, तब जैन धर्म, दर्शन, सिद्धांत और आचरण की शिक्षा देने के लिये संचार माध्यमों और वास्तविकता से जोड़ने वाले साधनों की अत्यंत आवश्यकता है ।

शिक्षा को संस्कार बनाने हेतु नर्सरी कक्षा से ही जैन वाड्.गमय का परिचय आवश्यक है। सरलतम पद्धति, आकर्षक डिजाइन, अभ्यास, प्रायोजना कार्य, व्यवहारिक क्रियाकलाप को बच्चों की उम्र के सापेक्ष मनोवैज्ञानिक तरीके से संयोजित करना आवश्यक है। पुरूस्कार एवं स्वल्पाहार का उद्देश्य आकर्षण है किंतु उसमें बँटने वाला बाजारू, अशुद्ध, खाद्य पदार्थ, चॉकलेट आदि उन्हें दी जा रही आचरण शिक्षा के लिये विरोधाभासी है जबकि तारण समाज का सूत्र है – जिसमें संक्षेप में सारभूत कथन होये, जाके सुने से जीव के मन, वचन, काय एकरूप हो जायें । ऐसे ही अनेक सूत्र तारण वाणी में गागर में सागर की तरह भरे हुये हैं। उन्होंने पूरा जिनागम मोतियों की तरह 14 ग्रंथों में पिरो दिया है। आवश्यकता है कि प्रथमतः जैन सिद्धांतों का परिचय हो। पद्धति रूढ़िमुक्त होकर नया स्वरूप स्वीकारें। प्रस्तुत पुस्तक में जिनागम में आये शब्दों, उनके अर्थ, प्रयोग और व्यवहार का परिचय, रंग, चित्र, रेखाचित्र, सुक्तियां, गीत, लघुकथा, छंद, फूलना, वार्तालाप के माध्यम से करवाया गया है। लेखन, वाचन, क्षमता का विकास करने हेतु प्रयोजना कार्य हैं। दक्षता संकेत, शब्दार्थ, विधा की विविधता इस पाठ्यक्रम की विशेषता है। समग्रतः जैन दर्शन के आधारभूत सिद्धांत इस आधार पाठ्यक्रम में सम्मिलित हैं ।

छिन्दवाड़ा के समाज श्री पं. जयचंद जी, मेरी माँ श्रीमती मालती जैन, पिता श्री रमेशचंद्र सिंघई, पति श्री दिलीप जैन, अग्रज श्री प्रमोद जैन, ब्र. डॉ. आरती दीदी, परिवार और समस्त समाज के बंधुओं के उत्साहवर्धन ने मुझे हमेशा इन कार्यों के लिये प्रेरित किया है। ब्र. श्री बसंतजी, ब्र. श्री आत्मानंद जी (श्री संघ) एवं समस्त साधकों द्वारा समाज उत्थान हेतु किया गया प्रयास, मुझे मेरे दायित्व की याद दिलाता आया है। आदरणीय दाजी श्रीमंत स्व. डालचंद जी एवं आदरणीय ब्र. गुलाबचंद जी, ब्र. जयसागर जी का वात्सल्यमयी सानिध्य आज हुये इस उपक्रम का बीज रूपक है।

वर्तमान अखिल भारतीय तारण–तरण जैन युवा परिषद् कार्यकारिणी के जुझारू, कर्मठ पदाधिकारियो नें पुस्तक प्रकाशन, पाठशाला एवं शिविर संचालन का बीड़ा उठाया है । जिसके निमित्त यह पाठ्यक्रम प्रस्तुत है। अ.भा.श्रीता.त. दि. जैन महासभा न्यास के वर्तमान कर्मठ, विद्वान सदस्यों का आभार जिन्होंने विकल्पों को साकार किया। संकलित समस्त रचनाकारों के प्रति आभार। आशा है पूर्वाग्रह रहित अवलोकन कर दिशा निर्देश करेंगे । विद्यार्थी लाभान्वित होंगे । सविनय ।

डॉ. मनीषा दिलीप जैन
छिन्दवाड़ा मो. नं. 9826449970

पाठ - 1

णमोकार मंत्र

णमो अरिहंताणं ।

णमो सिद्धाणं ।

णमो आइरियाणं ।

णमो उवज्झायाणं ।

णमो लोए सव्व साहूणं ।

एसो पंच णमोयारो, सव्व पावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढ़मं होहि मंगलं ।।

पाठ - 2

वर्णमाला

(स्वर वर्ण)

अ

अर्ह/अहिंसा

अजितनाथ जी

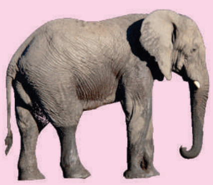

(चिह्न)

अरहनाथ जी

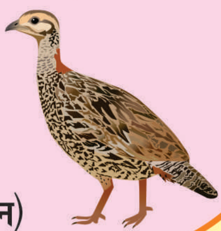

आ

आत्मा/आगम

आदिनाथ जी

(चिह्न)

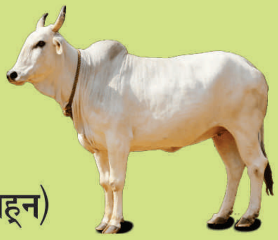

इ

इष्ट

इंद्रिय

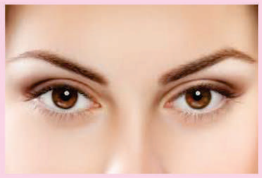

इक्षु

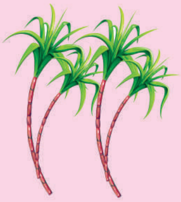

ई

ईश

ईंधन

ईख

वर्णमाला
(स्वर वर्ण)

उ

उत्तम/उपयोग

उपाध्याय उपदेश

ऊ

ऊँकार

ऊँकार ऊरध

(चिह्न)

ऋ

ऋषि/ऋजु

ऋषभनाथ जी

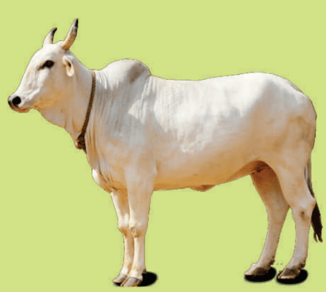

(चिह्न)

वर्णमाला
(स्वर वर्ण)

ए एषणा/एलक

एलक | एक
1

ऐ ऐश्वर्य/ऐहिक

ऐरावत

ऐरावत

ओ ओम्/ओला

ओज

ओमकार

औ औदारिक

औषधि

औदयिक

वर्णमाला

(अनुस्वार, विसर्ग)

अं

अंश

अंक

1

अंतरात्मा

अः

नमः

सिद्धेभ्यः

केवल बोलो नहीं, ऐसा आचरण करो

देव दर्शन - नित्य करेंगे ।
रात्रि भोजन - नहीं करेंगे ।
बिना छना जल - नहीं पियेंगे ।
देव-शास्त्र-गुरू को - नमन करेंगे ।
माता-पिता का - सम्मान करेंगे ।
जो करते हैं शाकाहार - वो रहते हैं सदाबहार ।
जो करते हैं माँसाहार - वो रहते हैं सदा बीमार ।

वर्णमाला
(व्यंजन वर्ण)

क

कर्म

कुँथुनाथ जी

(चिह्न)

ख

खजाना

खण्डागम

ग

गढ़ाशाह जी

ग्रंथ

घ

घातिया

घर

ङ.

गङ्.गा (गंगा)

पङ्.ख (पंख)

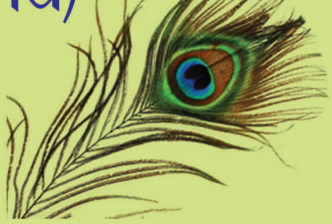

वर्णमाला
(व्यंजन वर्ण)

च

चक्षु

चंदाप्रभु जी

(चिह्न)

छ

छहढाला

छदमस्थ

ज

जाप

जिनेन्द्र

झ

झांझ

झरना

ञ

पञ्च (पंच)

मञ्च (मंच)

वर्णमाला
(व्यंजन वर्ण)

ट

टीका

टापू

ठ

ठाणा

ठहरना

ड

डंका

डमरू

ढ

ढाल

ढोलक

ण

णमो

णमोकार

वर्णमाला
(स्वंजन वर्ण)

त

तरण

तीर्थंकर

थ

थल

थाल

द

दान

देव

ध

धन

धर्मनाथ जी

(चिह्न)

न

नय

नेमिनाथजी

(चिह्न)

वर्णमाला

(व्यंजन वर्ण)

प

पद्‌मप्रभु जी

पार्श्वनाथ जी

(चिह्न)

फ

फल

फलाहार

(चिह्न)

ब

बल

बाहूबली जी

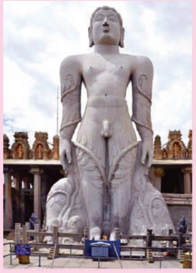

भ

भरत

भवभ्रमण

म

ममल

महावीरजी

(चिह्न)

वर्णमाला
(अल्पप्राण वर्ण)

य

योग

युगल

र

रक्षा

रत्न

ल

लाभ

लेखनी

व

विज्ञान

विमान

वर्णमाला
(महाप्राण वर्ण)

श
शांति

शरीर

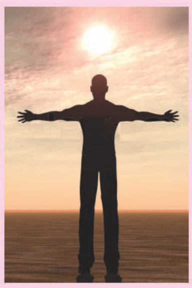

ष
षट्आवश्यक

षट्कोण

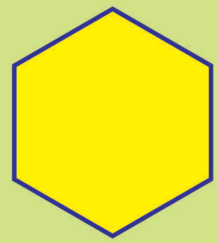

स
समोशरण

साधक

ह
हाथी

ह्रीं

वर्णमाला
(संयुक्त वर्ण)

क्ष

क्षण

क्षमा

त्र

त्रस

त्रिशला देवी

ज्ञ

ज्ञान

ज्ञानी

श्र

श्रमण

श्रावकाचार

वर्णमाला
(लुंठित वर्ण)

ड़

लड़का

लड़की

ढ़

पढ़ना

पढ़ाई

केवल बोलो नहीं, ऐसा आचरण करो

हैलो हाय छोड़िये - जय जिनेन्द्र बोलिये
वीर प्रभू का क्या संदेश - जियो और जीने दो।
राग मे न द्वेष में - विश्वास दिगम्बर वेश में।
मानवता का करते नाश - अंडा, मछली, मदिरा मांस।
कलयुग के हैं तीन डाकू - माँस, मदिरा, तम्बाकू।
अखिल विश्व में गूंजे नाद - सत्य अहिंसा जिंदाबाद।

- अभ्यास -

प्रश्न 1 चित्र देखकर रेखा खींचकर मिलान करो ।

नाम	चिह्न
1. अजितनाथ जी	
2. आदिनाथ जी	
3. ऋषभनाथ जी	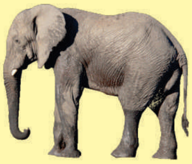
4. इंद्रिय	
5. चंदाप्रभु जी	
6. कुँथुनाथ जी	
7. पार्श्वनाथ जी	

अभ्यास

प्र. 2 चिह्न देखकर रेखा खींचकर शब्द से मिलाओ ।

अरहनाथ जी

आदिनाथ जी /ऋषभनाथ जी

कुंथुनाथ जी

चंदाप्रभु जी

धर्म नाथ जी

नमिनाथ जी

नेमिनाथ जी

पद्म प्रभु जी

पार्श्वनाथ जी

महावीर जी

अभ्यास

प्र. 3 चित्र मे रंग भरकर आरंभ का अक्षर लिखें ।

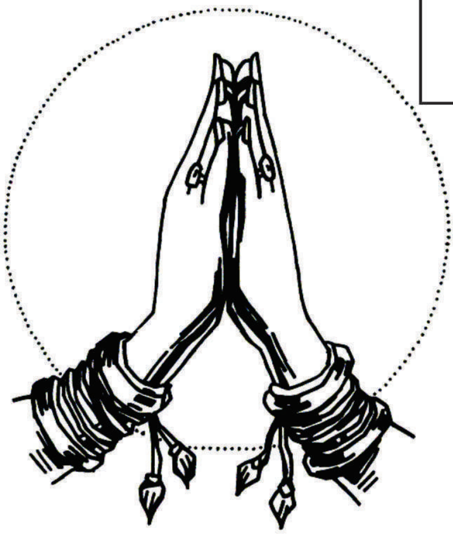

नमः

चक्षु

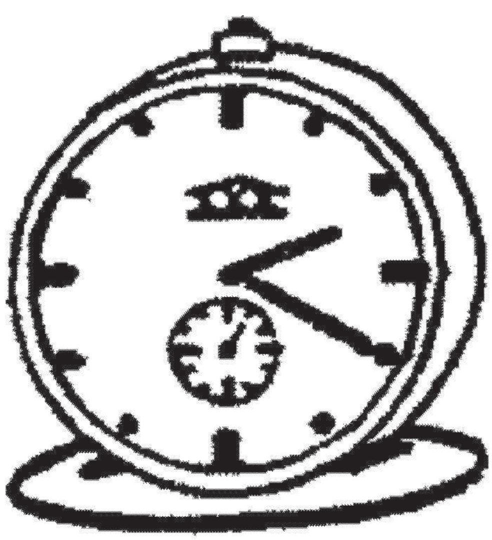

घड़ी

ढाल

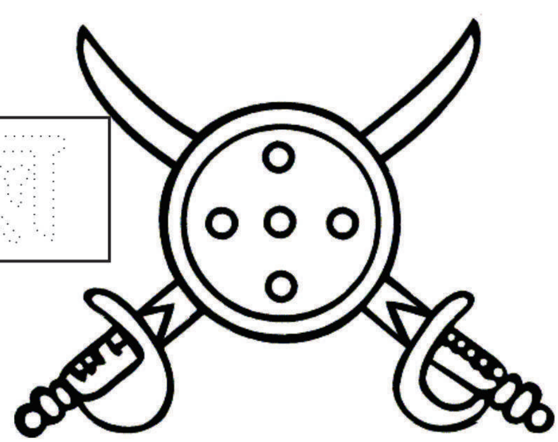

पाठ 3
गणना

1	१	एकम्	एक आत्मा
2	२	द्वितीया	दो जीव
3	३	तृतीया	तीन रत्नत्रय
4	४	चतुर्थी	चार कषाय
5	५	पंचमी	पाँच पाप
6	६	षष्टी	छः द्रव्य
7	७	सप्तमी	सात तत्व
8	८	अष्टमी	आठ कर्म
9	९	नवमी	नौ पदार्थ
10	१०	दशमी	दस धर्म

गणना

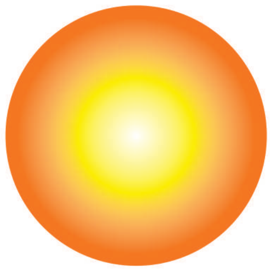

एक है आत्मा

जीव अजीव दो भिन्न सदा

जीव | अजीव

क्रोध

मान

चार कषाय बुरी बला है

माया

लोभ

पाँच पाप से बचना है

हिंसा

झूठ

चोरी

कुशील

परिग्रह

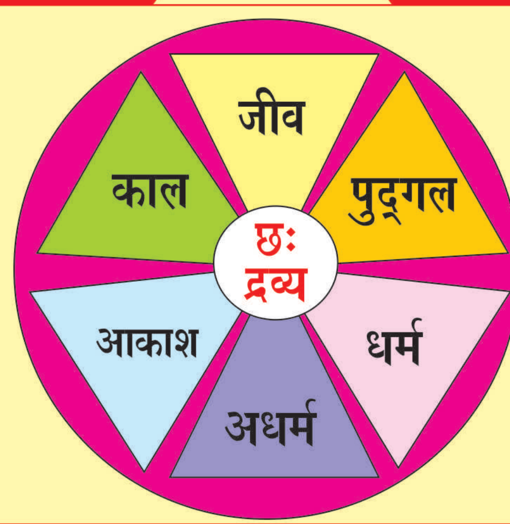

गणना

सात जीव तत्व

- अजीव
- आस्त्रव
- बंध
- संवर
- निर्जरा
- मोक्ष

सात तत्वों को ठोंक बजा

आठ कर्म

- ज्ञानावरण
- दर्शनावरण
- मोहनीय
- वेदनीय
- अंतराय
- आयु
- नाम
- गोत्र

आठ कर्मों को क्षय करो

नव जीव पदार्थ

- अजीव
- आस्त्रव
- बंध
- संवर
- निर्जरा
- मोक्ष
- पुण्य
- पाप

नौ पदार्थों को जान लो

दस लक्षणधर्म

- उत्तम क्षमा
- उत्तम मार्दव
- उत्तम आर्जव
- उत्तम सत्य
- उत्तम शौच
- उत्तम संयम
- उत्तम तप
- उत्तम त्याग
- उत्तम आकिंचन्य
- उत्तम ब्रम्हचर्य

दस धर्म को धारण करो

गणना

11	११	ग्यारस	प्रतिमा
12	१२	बारस	भावना
13	१३	तेरस	चारित्र
14	१४	चौदस	गुणस्थान
15	१५	पूर्णिमा	प्रमाद
16	१६	षोडश	सोलहकारण भावना
17	१७	सप्तदश	मरणभेद
18	१८	अष्टादश	दोष
19	१९	एकोंविश	जीवसमास
20	२०	विंशति	प्ररूपणा

गिनती सीखें गाते-गाते

1	क्या कहता है नंबर वन, जैन धर्म है एवन ।
2	क्या कहता है नंबर टू, मोक्षमार्ग में चलता हूँ।
3	क्या कहता है नंबर थ्री, होना है संसार से फ्री।
4	क्या कहता है नंबर फोर, नहीं बनूंगा मैं चोर।
5	क्या कहता है नंबर फाईव, क्रोध कर दो गायब।
6	क्या कहता है नंबर सिक्स, आत्मा, आत्मा में फिक्स।
7	क्या कहता है नंबर सेवन, रात में न करना भोजन।
8	क्या कहता है नंबर ऐट, पाप से नहीं करना भेंट।
9	क्या कहता है नंबर नाईन, मुक्तिपुरी को करना साईन।
10	क्या कहता है नंबर टेन, मैं हूँ सदा सच्चा जैन।

1	एक एक एक - आचरण रखो नेक ।
2	दो दो दो - भेद विज्ञान करो।
3	एक दो तीन - आत्मा में हो लीन
4	दो तीन चार - सादा जीवन उच्च विचार।
5	तीन चार पाँच - सादी हो मेरी पोशाक।
6	चार पाँच छः - मीठे वचन कह।
7	पाँच छः सात - ध्यान से सुनो बात।
8	छः सात आठ - णमोकार का करो पाठ।
9	सात आठ नौ - जिनवाणी को नमो।
10	आठ नौ दस - मोक्ष चाहिये बस।

पाठ 4
वस्तु परिचय

जीव

जो जानता है जो देखता है ।
जिसमें ज्ञान है । वह जीव है ।

मैं जीव हूँ । मुझमें ज्ञान है ।

मनुष्य गति में जीव :-

बालक

युवक

पुरूष

वृद्ध

बालिका

युवती

महिला

वृद्धा

वस्तु परिचय

जीव

जो जानता है जो देखता है । जिसमें ज्ञान है । वह जीव है ।

मैं जीव हूँ । मुझमें ज्ञान है ।

तिर्यंच गति में जीव :-

पेड़ (एकेन्द्रिय)

सीप (दो इंद्रिय)

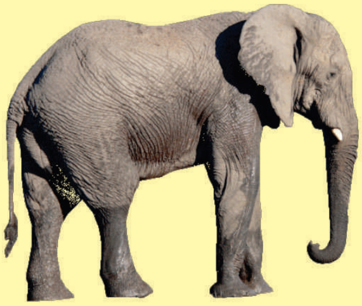

हाथी (पंचेन्द्रिय)

चींटी (तीन इंद्रिय)

मच्छर (चार इंद्रिय)

देव गति में जीव

ज्योतिष देव, सौधर्म इंद्र, भवनवासी, विमानवासी, व्यंतरदेव

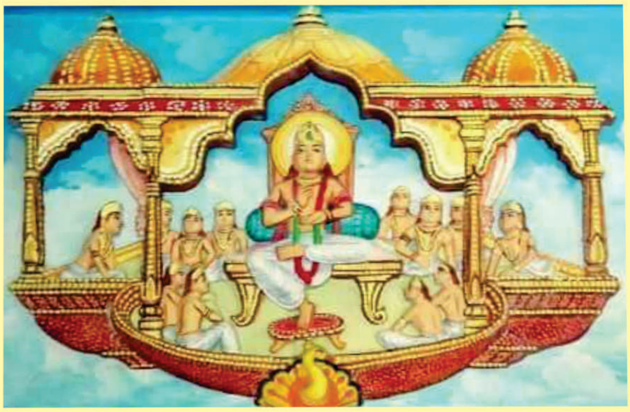

नरक गति में जीव

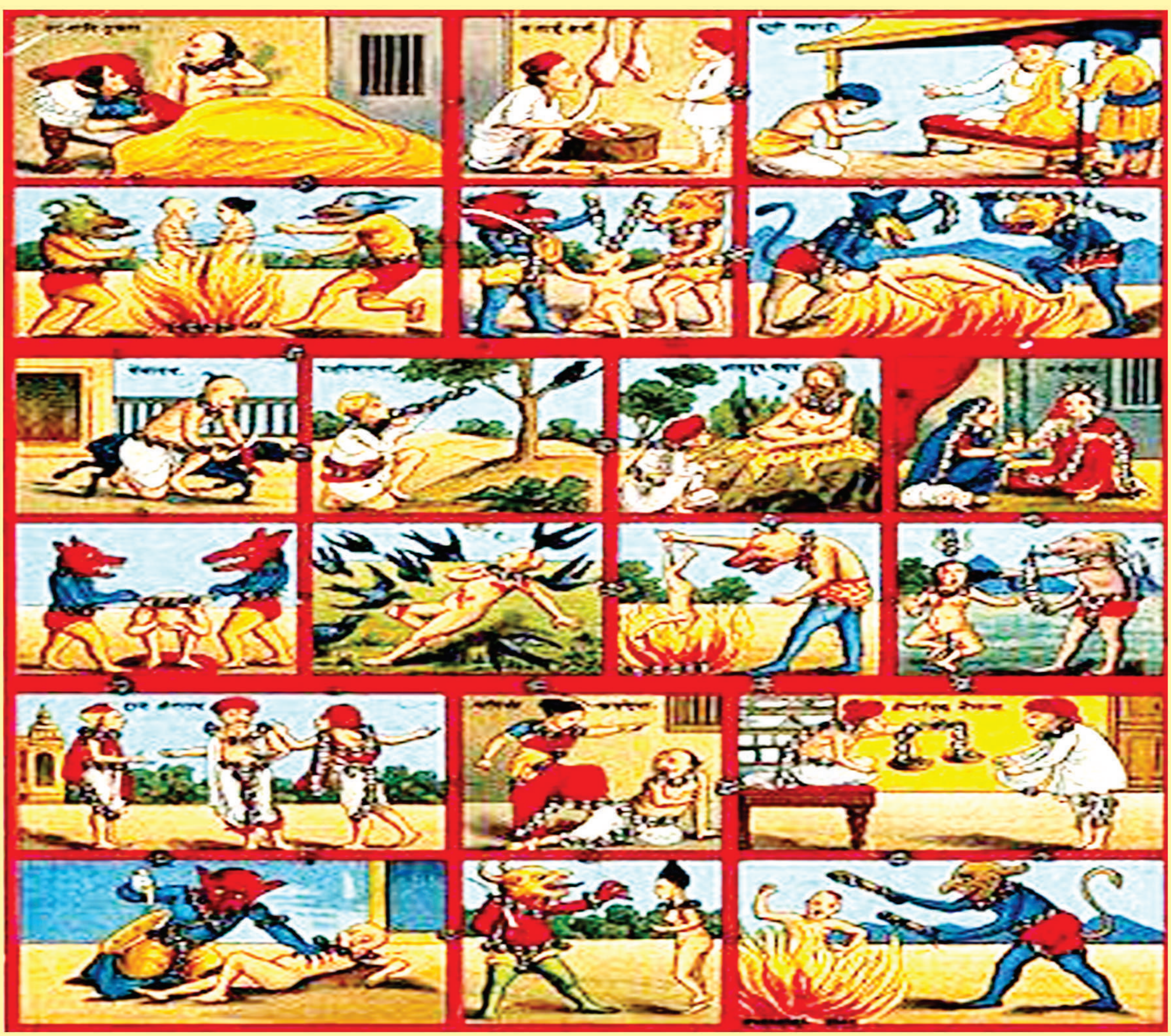

वस्तु परिचय

अजीव

जो जानता नहीं है । जो देखता नहीं है । जिसमें ज्ञान नहीं है । वह अजीव है ।

ये वस्तुएँ अजीव हैं। इनमें ज्ञान नहीं है।

स्कूल का सामान (पुस्तक, पेन, स्कूलबैग, कॉपी आदि)

खिलौने (बस, कार, गुडिया, गेंद, बैट आदि)

मनोरंजन का सामान (मोबाइल, टीवी, रिमोट, वीडियो, कैमरा आदि)

बर्तन (कप, गिलास, थाली, चम्मच, कटोरी)

पाठ 5

चौबीस तीर्थंकर नाम व चिह्न

बैल चिह्न है ऋषभनाथ का, अजित जिनेश्वर के गज जान।
घोड़ा शंभव प्रभु के होता, वानर अभिनंदन पहिचान ।।

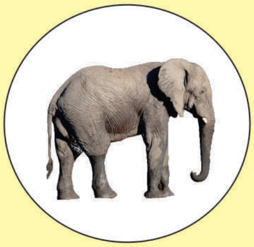 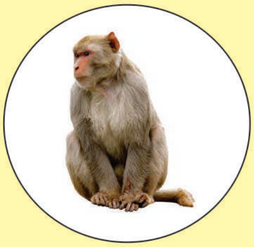

चकवा सुमतिनाथ के कहिये, कमल पद्मप्रभ हैं गुणखान।
कहा सांथिया श्री सुपार्श्व के, चन्द्र चन्द्रप्रभा का दुतिमान।

पुष्पदन्त के मगर कहा है, कल्पवृक्ष शीतल पद मान।
है गैंडा श्रेयांसनाथ के, भैंसा वासुपूज्य के जान।।

चौबीस तीर्थंकर नाम व चिह्न

शूकर विमल पदाम्बुज देखा, अनन्तनाथ पद सेही मान।
धर्मनाथ के वज्र सुजानों, हिरन शान्ति जिन की पहिचान।।

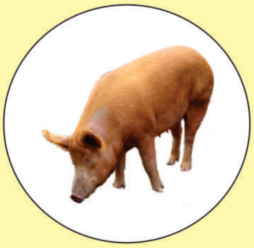

कुन्थुनाथ के अज की महिमा, चंचल मीन अरजिन जान।
मल्लिनाथ के कलश सुशोभित, कछुआ मुनिसुव्रत बल खान।।

प्रभु नमि नीलकमल से चिन्हित, नेमिनाथ पद शंख महान्।
सर्प विराजे पार्श्वनाथ पद, महावीर पद सिंह सुजान।।

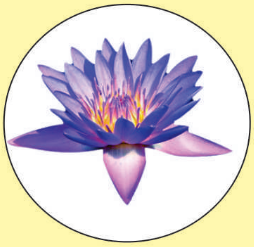

पाठ - 6
आओ गीत गायें

वंदित्तु सव्व सिद्धे ध्रुवमचल मणो वमं गदिंपत्ते
वोच्छामि समय पाहुडमिणमो सुदकेवलीभणिदं

प्रेम भाव हो
सब जीवों से
गुणीजनों में हर्ष प्रभो,
करूणा स्त्रोत
बहे दुखियों पर
दुर्जन में मध्यस्थ विभो

कभी धर्म नहीं छोडूँगा
कभी क्रोध नहीं करूँगा ।
कभी लोभ नहीं करूँगा
कभी मान नहीं करूँगा
कभी कपट नहीं करूँगा ।

मैं वह हूँ जो है भगवान, जो मैं हूँ वह है भगवान
अंतर यही ऊपरी जान, वे विराग मैं राग वितान ।

आओ गीत गायें

एक दो - आत्मा में लीन हो ।
तीन-चार - कषायें जीतो चार ।
पाँच-छः - कर्मों का हो पूरा क्षय ।
सात-आठ - गल जायें सारे पाप ।
नौ-दस - सुख पाना है हमको बस ।

अपनी गलती को करके दूर

ज्ञानी ध्यानी बन जाऊँगा
आतमा में रम कर मैं तो
सच्चा सुख पा जाऊँगा ।

अरिहंतो को नमो-नमो
सब सिद्धों को नमो-नमो
आचार्यों को नमो-नमो
उपाध्यायों को नमो-नमो
मुनिजनों को नमो-नमो

जीव बना है ज्ञान से
मोक्ष मिलता ज्ञान से
सुख होता है ज्ञान से
कर्म छूटते ज्ञान से
भगवान बनेंगे ज्ञान से

- अभ्यास एवं प्रायोजना कार्य -

प्रश्न.1 णमोकार महामंत्र याद करो ।

प्रश्न.2 णमोकार महामंत्र गाकर सुनाओ।

प्रश्न.3 वर्णमाला लिखो और याद करके सुनाओ ।

प्रश्न.4 चौबीस तीर्थंकरों के नाम लिखो।

प्रश्न.5 चौबीस तीर्थंकरों के चिह्नों का चित्र बनाओ, रंग भरो।

प्रश्न.6 गिनती में आये शब्दों पर दीदी और भैयाजी से बात करो।

प्रश्न.7 गतियों के विषय में पंडित जी से बात करो।

प्रश्न.8 इंद्रियाँ क्या होती है? पता करो।

प्रश्न.9 जीव-अजीव का चार्ट बनाओ। चित्र बनाओ रंग भरो।

प्रश्न.10 तीर्थंकर कौन होते हैं? पता करो।

प्रश्न.11 तीर्थंकरों के चिह्न क्यों होते हैं? पता करो।

प्रश्न.12 तीर्थंकरों के नाम चिह्न सहित याद करो।

प्रश्न.13 मनुष्य गति के सुख है या दुख पता करो।

प्रश्न.14 तिर्यंच गति में दुख है या सुख पता करो।

प्रश्न.15 देव गति में सुख है या दुख पता करो ।

प्रश्न.16 नरक गति का चित्र देखकर आपस में बात करो।

प्रश्न.17 सात तत्वों के नाम याद करो।

प्रश्न.18 छः द्रव्यों के नाम याद करो।

प्रश्न.19 दस धर्मों के नाम याद करो।

प्रश्न.20 पाँच पाप, चार कषाय के नाम याद करो।

प्रश्न.21 कोई पाँच गीत कंठस्थ करो।

- प्रार्थना -

वीर प्रभु की हम संतान, बनना है हमको भगवान।
सत्य अहिंसा इनका गान, जीव सताना दुख की खान।।
निशि भोजन में हिंसा जान, पानी पीना पहले छान।
वीर प्रभु की हम संतान, बनना है हमको भगवान।।
जिनदर्शन का रखना ध्यान, इससे बनते सब भगवान।
वीर प्रभु की हम संतान, बनना है हमको भगवान।।
णमोकार का करना ध्यान, इससे कटते पाप महान।
वीर प्रभु की हम संतान, बनना है हमको भगवान।।
आतम देह भिन्न पहचान, निर्णय करके बनो महान।
वीर प्रभु की हम संतान, बनना हमको भगवान।।

।। अच्छे बच्चे प्यारे बच्चे ।।

अच्छे बच्चे प्यारे बच्चे, अकल के अच्छे मन के सच्चे
काम आपका आप ही करते, काम आज का आज ही करते ।
आलस में न समय गँवाते, मंदिर जाते, शाला जाते ।
चोरी - चुगली कभी न करते, जीवों को न कभी सताते ।
ऐसे प्यारे बच्चे, सबको अच्छे लगते ।।